Deg 2 H
Paper 4

S.S. Haider

Module-1 Opportunity Cost Theory of Int. Trade

रिकार्डो द्वारा प्रतिपादित तुलनात्मक लागत सिद्धान्त मूल्य के श्रम सिद्धान्त पर आधारित है क्योंकि वह लागत को केवल श्रम में ही आंकता है। इसे वास्तविक लागत की विचारधारा कहते हैं। इस विचारधारा पर आधारित रिकार्डो का सिद्धान्त न केवल अव्यावहारिक है बल्कि अवास्तविक मान्यताओं पर आधारित है। वस्तुओं का उत्पादन केवल श्रम द्वारा ही नहीं होता बल्कि इसके अतिरिक्त और साधनों का प्रयोग होता है। इसके अतिरिक्त और भी दोष थे। जिसे प्रो० हैबरलर ने दूर किया और एक वैकल्पिक विचारधारा के रूप में अवसर लागत सिद्धान्त प्रस्तुत किया।

अवसर लागत का अर्थ — एक दिये हुए उत्पादन की अवसर लागत वैकल्पिक उत्पादन की वह मात्रा है जिसे उन साधनों द्वारा उत्पादित किया जा सकता था। इसे प्रतिस्थापन लागत भी कहते हैं। जैसे एक किसान अपने खेत में गेहूँ या चना दोनों में से किसी एक का उत्पादन कर सकता है। यदि वह चना का उत्पादन करता है तो चना का अवसर लागत गेहूँ की वह मात्रा है जिसका उत्पादन किया जा सकता था, किन्तु जिसका परित्याग चने का उत्पादन करने के लिए कर दिया गया।

उत्पादन के क्षेत्र में अवसर लागत का प्रयोग आस्ट्रियन अर्थशास्त्रियों ने किया था। यह इस तथ्य पर आधारित है कि उत्पादन के साधन सीमित होते हैं तथा उनका प्रयोग अनेक क्षेत्रों में किया जा सकता है। स्टिग्लर के अनुसार, "किसी एक वस्तु A का उत्पादन करने में उत्पत्ति के किसी साधन X की लागत अन्य वस्तुओं की वह अधिकतम मात्रा है जिसका उत्पादन X करता है", अर्थात B की वह मात्रा जिसका परित्याग वस्तु A का उत्पादन करने में कर दिया जाता है, A की अवसर लागत है।

हैबरलर के अनुसार विभिन्न देशों के उत्पत्ति के साधनों में भिन्नता होती है किन्तु किसी एक देश में इनकी पूर्ति स्थिर रहती है तथा इन साधनों को कई तरह से प्रयुक्त किया जा सकता है। इन्हें अविशिष्ट साधन कहते हैं। कुछ साधन विशिष्ट होते हैं जिन्हें किसी खास उद्देश्य के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है।

हैबरलर ने दो वस्तुओं के बीच विनिमय अनुपात को अवसर लागत में व्यक्त किया है जैसे एक विभिन्न उत्पत्ति के साधनों के संयोग से या तो 4X या 8Y का उत्पादन कर सकता है तो 1Y का उत्पादन करने की अवसर लागत $\frac{1}{2}$X होगी। इस प्रकार दो वस्तुओं के बीच विनिमय अनुपात प्रतिस्थापन वक्र द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। प्रतिस्थापन वक्र की आकृति उत्पादन के नियमों से प्रभावित होती है। हैबरलर

Scanned with CamScanner

ने तीनों लागत दशाओं में विदेशी व्यापार की सम्भावनाओं को अपने अवसर लागत सिद्धान्त में सम्मिलित किया है।

अवसर लागत की मान्यताएँ — हैबरलर ने अवसर लागत वक्र की व्याख्या निम्न मान्यताओं के अन्तर्गत की है।

① उत्पत्ति के साधनों एवं वस्तु के बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता रहती है।
② प्रत्येक वस्तु की कीमत उसकी सीमान्त लागत के बराबर होती है।
③ किसी भी उत्पत्ति के साधन की इकाईयों की कीमत प्रत्येक रोजगार में समान रहती है।
④ उत्पत्ति के विभिन्न साधन पूर्ण रोजगार की स्थिति में रहते हैं तथा उत्पत्ति के प्रत्येक साधन की कीमत, प्रत्येक प्रयोग में सीमान्त उत्पादन के बराबर होती है।
⑤ दी हुई तकनीक की स्थिति के अन्तर्गत उपलब्ध साधनों से वस्तुओं का उत्पादन सर्वाधिक कुशलता से किया जाता है।
⑥ किसी देश में उपलब्ध साधनों की पूर्ति स्थिर रहती है।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार - स्थिर अवसर लागत दशा में

यदि दो देश प्रत्येक वस्तु का उत्पादन स्थिर लागत के अन्तर्गत कर रहे हैं तथा प्रत्येक देश के उत्पादन में समान अनुपात में उत्पत्ति के साधनों का प्रयोग किया जा रहा है तो अवसर लागत वक्र एक सीधी रेखा होगी। जिसका अर्थ यह है कि एक वस्तु को दूसरी वस्तु से विनिमय करने की सीमान्त अवसर लागत स्थिर रहेगी। सीमान्त अवसर लागत दर के स्थिर रहने के कारण उत्पादन की सापेक्षिक लागतें भी स्थिर रहेंगी और माँग दशाओं से अप्रभावित रहेंगी।

स्थिर अवसर लागत दशा में उत्पादन सम्भावना वक्र एक सीधी रेखा के रूप में होगा। नीचे के चित्र में एक काल्पनिक उदाहरण के द्वारा भारत के उत्पादन सम्भावना वक्र को प्रदर्शित किया गया है। इस रेखा चित्र से स्पष्ट है कि भारत यदि अपने उत्पत्ति के सारे साधनों को कपड़े के उत्पादन में लगा दे तो 5 इकाईयों का उत्पादन कर सकता है तथा यदि कपड़े का बिल्कुल उत्पादन न करे तो गेहूँ की 10 इकाईयों का उत्पादन कर सकता है। इन दोनों सम्भावनाओं के बीच यदि वह कपड़ा एवं गेहूँ दोनों का उत्पादन करना चाहे तो उसके सामने चार सम्भावनाएँ हैं जो MN उत्पादन सम्भावना रेखा पर A, B, C, D हैं। A पर कपड़े की 4 इकाई तथा गेहूँ की 2 इकाई का उत्पादन कर सकता है। B, C, D पर वह इन्हीं वस्तुओं की क्रमशः 3, 4, 2 और 6 तथा 1, 8 इकाईयों का उत्पादन कर सकता है।

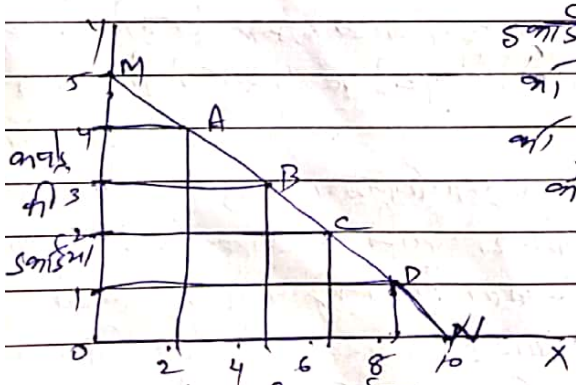

Scanned with CamScanner

अतः कहा जा सकता है कि गेहूं की दो अतिरिक्त इकाइयों की अवसर लागत कपड़े की 1 इकाई है। यहां चूंकि स्थिर लागत के अन्तर्गत उत्पादन हो रहा है गेहूं एवं कपड़े की प्रतिस्थापन दर, प्रत्येक उत्पादन सम्भावना पर 2:1 है।

उत्पादन सम्भावना वक्र देश के आन्तरिक विनिमय अनुपात को व्यक्त करता है। विदेशी व्यापार को लाभप्रद बनाने के लिए दोनों देशों के उत्पादन सम्भावना वक्रों का ढाल अलग अलग होना चाहिए। इसे चित्र में दो देशों के उत्पादन सम्भावना वक्रों की विभिन्न स्थितियों को बताया गया है। इन रेखाचित्रों में अवसर लागत वक्र EE तथा PP क्रमशः इंगलैण्ड और पुर्तगाल में दो वस्तुओं शराब एवं कपड़े की सापेक्षिक उत्पादन लागतों को व्यक्त करते हैं। इन देशों में व्यापार उसी समय सम्भव है जब इन उत्पादन सम्भावनाओं वक्र का ढाल भिन्न भिन्न हो। चित्र B C D में यह ढाल भिन्न है किन्तु A में दोनों वक्रों EE और PP का ढाल समान है जो यह व्यक्त करता है कि दोनों देशों में दोनों वस्तुओं की उत्पादन लागत में समान अन्तर है।